



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी दलित कविता में चित्रित शैक्षिक समस्याएँ

डॉ. शितल प्रल्हाद चव्हाण

सहाय्यक प्राध्यापक,

विश्वासराव नाईक कला, वाणिज्य आणि बाबा नाईक विज्ञान महाविद्यालय, शिराळा.

Manuscript ID:

IJAAR-C130350

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 250 - 254

Submitted: 03 Feb. 2026

Revised: 10 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. शितल प्रल्हाद चव्हाण.

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786414

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786414>



Creative Commons



सार:

यह शोध पत्र 21वीं सदी की हिंदी दलित कविता में अभिव्यक्त शैक्षिक समस्याओं का विश्लेषण करता है। इसमें बताया गया है कि शिक्षा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है, जो केवल आजीविका का साधन नहीं बल्कि व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास का आधार है। शिक्षा से व्यक्ति में नैतिकता, सहिष्णुता, विवेक, सामाजिक चेतना और आत्मनिर्भरता विकास होता है। ऐतिहासिक रूप से वर्ण व्यवस्था के कारण दलित वर्ग को शिक्षा से वंचित रखा गया। शिक्षा का अधिकार केवल उच्च वर्ग तक सीमित था। दलितों को न केवल विद्यालयों में प्रवेश से रोका गया, बल्कि सामाजिक और धार्मिक आधार पर भी उन्हें ज्ञान प्राप्ति से दूर रखा गया। छुआछूत, भेदभाव, धार्मिक प्रतिबंध और सामाजिक भय के कारण दलित बच्चों को विद्यालयों में अपमानित किया जाता था। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा संविधान के माध्यम से समानता और शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित किया गया है। महात्मा ज्योतिबा फुले ने शुद्र और स्त्री की शिक्षा के महत्व पर बल दिया है। दलित कवियों जैसे वामन दादा कर्डक और भन्ते नागसेन महाथेरो ने अपनी रचनाओं में दलित बच्चों को शिक्षा से वंचित रखने की पीड़ा और व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर किया है।

मुख्य शब्द: दलित शिक्षा, शैक्षिक समस्याएँ, वर्णव्यवस्था, सामाजिक असमानता, शैक्षिक शोषण, सामाजिक न्याय, समानता का अधिकार, शिक्षा का महत्व, सामाजिक परिवर्तन, दलित चेतना, अशिक्षा, सामाजिक प्रतिबंध।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. शितल प्रल्हाद चव्हाण. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी दलित कविता में चित्रित शैक्षिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 250 - 254. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786414>

प्रस्तावना:

मानव जीवन तीन मूलभूत आवश्यकताओं पर चलता है। काल परिवर्तन के पश्चात् मूलभूत साधनों में वृद्धि होती हुई दृष्टिगत होती है, जिसके अंतर्गत रोटी, मकान, कपड़े के साथ शिक्षा महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। शिक्षा ही वह

महत्वपूर्ण साधन है, जिससे समाज विकसित बनने में मदद मिलती है। शिक्षा के माध्यम से मानव के जन्मजात गुणों को विकसित किया जाता है। समाज की उन्नति शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा अर्थात् केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है अपितु व्यक्ति के अंदर मूल्य का विकास भी शिक्षा द्वारा ही



संभव होता है। सर्वधर्म समभाव, अहिंसा, नैतिकता, सहिष्णुता, आदि मूल्य शिक्षा से प्राप्त होते हैं। उपर्युक्त मूल्यों से संस्कारी हुआ व्यक्ति सभ्य एवं सुसंस्कृत नागरिक बनने योग्य होता है, जो समूचे राष्ट्र के लिए हितकारक बनता है और राष्ट्र को प्रगति की दिशा में ले जाने में सक्षम होता है। शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक आजीवन चलती रहती है। बालक के जन्म के पश्चात् से माता-पिता, परिवार, अड़ोस-पड़ोस, समाज, शहर, राज्य, देश आदि स्तरों पर बालक की शिक्षा विकसित होती चली जाती है। वर्ण व्यवस्था के कारण पिछड़े वर्ग को शिक्षा से वंचित रखने का कर्म किया। शिक्षा से वंचित समाज की उन्नति नहीं हो सकती। शिक्षा से वंचित आदमी अपने जीवन में चाह कर भी परिवर्तन नहीं कर सकता। उसकी जरूरत केवल रोजी-रोटी तक ही सीमित रहती है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने संविधान में समानता का अधिकार प्रस्तावित किया, जिस कारण पिछड़े समाज को शिक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ। केवल अधिकार प्राप्त होने से शिक्षा प्राप्त नहीं होती बल्कि समाज में भी यह जागरूकता फैलानी आवश्यक थी कि शिक्षा पर सभी का समान अधिकार है। समाज में सवर्ण जो दलित वर्ग को जानबूझकर शिक्षा से वंचित रखने का प्रयास करते थे, समता के अधिकार से दलित वर्ग भी शिक्षा प्राप्त करने लगा।

शिक्षा का महत्व:

‘शिक्षा’ का सामान्य अर्थ है- सीखना, ज्ञान प्राप्त करना, अनुभव प्राप्त करना। “नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार शिक्षा का अर्थ: विद्या पढ़ने अथवा कला सीखने की क्रिया।”¹ शिक्षा समाज को विकास के उच्च स्तर पर ले जाने का महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा व्यक्ति को मूल्य और संस्कृति से

परिपूर्ण बनाती है। शिक्षा से ज्ञान प्राप्ति होती है। ज्ञानार्जन करने से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है। व्यक्ति की बुद्धिमत्ता विकसित होती है। व्यक्ति विभिन्न कौशल्य प्राप्त करता है। शिक्षा से व्यक्ति की सृजन क्षमता, नैदानिक क्षमता तथा नीत नई वैचारिक क्षमता का विकास होता है। सामाजिक प्रतिबद्धता, सामाजिक सरोकार के प्रति सचेत शिक्षा ही बनाती है। शिक्षा से वंचित समाज पिछड़ा हुआ, अविकसित रह जाता है। दलित समाज, अधिवासी समाज शिक्षा से वंचित महिलाएं आदि की ओर गौर करें, तो शिक्षा के महत्व को देखा जा सकता है।

शिक्षा केवल इंसान को बेहतर ही नहीं बनाती बल्कि सही-गलत आदि में भेद करने का सामर्थ्य शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है। शिक्षा समाज में व्यवसाय नौकरी विभिन्न कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए मददगार सिद्ध होती है। शिक्षा मनुष्य के विकास के साथ मनुष्य की आवश्यकता है। मौलिक आवश्यकताओं से अधिक विचार मनुष्य द्वारा किया जाने लगा। समूह में रहने वाला मनुष्य शिक्षित एवं सामाजिक होता हुआ दिखाई देता है, यह परिवर्तन निरंतर देखा गया है। शिक्षित मनुष्य निर्णय लेने में समर्थ होता है। शिक्षा के कारण अच्छे-बुरे की समझ बखूबी आती है। शिक्षा से परिपूर्ण व्यक्ति अपने साथ अपने परिवार, समाज तथा देश का मार्गदर्शन करने में सक्षम होता है। शिक्षा ही वह सेतु है, जो मनुष्य को समाज से जोड़ता है। समाज की सड़ी-गली मान्यताओं, गलत रूढ़ि, परंपराओं, अंधविश्वास की ओर देखने की वैज्ञानिक दृष्टि शिक्षा से ही प्राप्त होती है।

शैक्षिक समस्याएं:

वर्ण व्यवस्था में दलितों को शिक्षा का अधिकार नहीं था। शिक्षा का अधिकार सिर्फ ब्राह्मण जाति को था। प्राचीन काल से दलितों को शिक्षा से दूर रखा गया।



महात्मा फुले ने शूद्रों की शिक्षा की स्थिति को निर्देशित करते हुए लिखा,

"विद्या विना मती गेली, मती विना नीति गेली
नीति विना गती गेली, गती विना वित्त गेले
वित्त विना शुद्र खचले
इतके अनर्थ, एका अविद्येने केले।"²

शिक्षा न होने के कारण शूद्रों की स्थिति बिगड़ती गई। उनकी आर्थिक कठिनाई अभी महसूस होती गई। छुआछूत के कारण अछूत जाति के बच्चों के साथ दूसरी जाति के बच्चे बैठने के लिए तैयार नहीं होते थे। पाठशाला में दलित बच्चों को अध्यापक पढ़ाने के लिए भी तैयार नहीं थे। दलितों के लिए अलग पाठशाला की व्यवस्था भी मौजूद नहीं थी। वर्ण व्यवस्था के कारण दलितों का शैक्षिक शोषण भी होता रहा था। अगर दलित पढ़-लिख गए, तो सवर्णों की सेवा करने के लिए तैयार नहीं होंगे। यह भय सवर्ण लोगों में था। इस कारण दलितों को शिक्षा से दूर रखने का प्रयास किया गया जाता था। शिक्षा के कारण दलितों के मन में सुधार आ जाने से समाज के गंदे काम करने के लिए दलित लोग नकार देंगे इसलिए दलित समाज अशिक्षित रहने में ही सवर्ण लोगों का फायदा था। दलित शिक्षा के प्रति अपना मंतव्य व्यक्त करते हुए कसबे लिखते हैं, "दलितों को शिक्षा का अधिकार ही नहीं था दूसरों की सेवा करना गुलामी करना यही उनके जीवन का लक्ष्य बना दिया था। खुद को जीवन के निर्णय करने का अधिकार उन्हें नहीं था परिणाम था दलित शिक्षाहीन रहने लगे वास्तव में शिक्षा ही मनुष्य का विकास होने में सहायक होती है किंतु वही शिक्षा लेने का दलितों को अधिकार न देकर भारतीय समाज ने दलितों को बीटा पूर्ण जीवन जीने के लिए विवश करके भारतीय समाज ही नहीं भारत देश को भी विकास से वंचित रखा इस कारण

अशिक्षित होने का कलंक दलितों को लग गया।"³ दलितों का शैक्षिक शोषण होने के कारण दलित पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आ रहा काम ही करते रहे। शिक्षा से दूर रखने के कारण दलितों में शिक्षा के प्रति लगाव कम हो गया। शिक्षा को लेकर उसके मन में यही सवाल उठता कि शिक्षा अर्जित कर वह क्या करेगा? सवर्णों की गुलामी करना ही दलित अपना कर्तव्य मानने लगे। वर्ण व्यवस्था के कारण, शिक्षा के अभाव के कारण दलित लोगों का जीवन दरिद्रता से पूर्ण बन गया। उन्होंने सवर्णों की सेवा करने में ही अपना जीवन व्यथित कर दिया। अगर कोई दलित शिक्षा लेने के लिए तैयार हो जाता, तो सवर्ण लोगों द्वारा उनके मन में भय पैदा किया जाता था।

"विद्या पड़े अगर शुद्र तो नरक जेल को जायेगा।

सुबरन मोती धारण कर है शुद्र नहीं सुख पायेगा।

कथा भागवत वेद पुराणों को भी कभी नहीं छू पायेगा।

इन कामों को जो कोई करे तो कोड़ी हो जायेगा।"⁴

अगर कोई शुद्र विद्या पढ़ले, तो वह मृत्यु के पश्चात् नरक में जाएगा। विद्याधारण करने से शुद्ध सुख से अपनी जिंदगी नहीं जी सकता। कथा, भागवत, वेद, पुराणों आदि धर्म ग्रंथों को कभी छू नहीं सकता था। यदि इस प्रकार के जब कार्य उनके द्वारा किए जाएंगे तब उनको दंडित किया जाएगा, ऐसा धर्म व्यवस्था में प्रावधान था।

दलित वर्ग के लिए शिक्षा की आवश्यकता भी है, यह सवर्ण वर्ग के लिए मानसिक तौर पर अमान्य था। अधिकतर अध्यापक ब्राह्मण होने के कारण उनका शूद्रों के प्रति रवैया गलत था। जो ब्राह्मण पढ़ाने का कार्य करते थे, वह दलित वर्ग को छुआछूत के डर से ज्ञान देने में हिचकिचाते थे। समाज



व्यवस्था में शूद्रों का स्थान सबसे निचले पायदान पर था। निम्न दर्ज के काम शूद्रों से करवाए जाते थे। दलित लोक पढ़-लिखकर समृद्ध हो गए तो, जो व्यवस्था बनाई गई है, जिसके अंतर्गत शूद्रों को केवल सेवा का काम दिया जाता है और बाकी को उच्च वर्ग के अंतर्गत शामिल किया जाता है, वह व्यवस्था बिखर जाती। परिणाम स्वरूप शूद्रों को शिक्षा से दूर रखने का कार्य तत्कालीन समाज व्यवस्था द्वारा किया गया।

वामन दादा कर्डक शिक्षा के बारे में लिखते हैं,

“शिक्षा दो शिक्षा दो

देश के सारे बच्चों को शिक्षा दो

जात ना जानो धर्म ना जानो शिक्षा दो

भेद ना मानो सबकी सारी शिक्षा दो

मीठे फल पाएंगे ऐसी शिक्षा दो

ए सुविधा सारे बच्चे पाएंगे

...पाएंगे तो सारे स्कूल जाएंगे

सबको शिक्षा पाने की सुविधा दो”⁵

वामन दादा कर्डक द्वारा भीम गीतों में बच्चों के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर ध्यान दिया है। जाति-धर्म की सीमाएं तोड़कर बच्चों को शिक्षा देने की आवश्यकता है। तभी आगे चलकर वे भारत के सफल नागरिक बन सकते हैं क्योंकि सफल नागरिकों द्वारा ही राष्ट्र विकास के पथ पर मार्ग क्रमण करता है। बच्चों के द्वारा आने वाले भारत का वर्तमान उज्ज्वल करने के लिए शिक्षा की बेहद आवश्यकता है। शिक्षा की सुविधा से वंचित बच्चा केवल अपने जीवन के ही नहीं बल्कि राष्ट्र के विकास में भी बाधा उत्पन्न करता है। वहीं पर शिक्षित बच्चे नौकरी-व्यवसाय के विभिन्न मार्ग से अर्थाजन करते हुए

राष्ट्र के विकास में अपना भरसक योगदान देने में कामयाब होते हैं। सभी बच्चों को शिक्षित होने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। भन्ते नागसेन महाथेरो दलित शिक्षा का वर्णन करते हुए लिखते हैं,

“भारत में आरत मची, पाखंड रहौ बलखाया।

शुद्र जाति के के बालकन, मास्टर नहीं पढ़ाया।

कुछ दिन स्याने भये, पढ़ना जब गये गुरु धमकावे जाए

छूत को भूत लगाए दूर बैठावें। पिता विदेश में रहे नौकरी

गहैं बहुत दुख पावे, स्कूल से दये भगाए संग ले जावें।”⁶

पाखंडी ब्राह्मणों ने समूची व्यवस्था को अपने अधीन कर रखा था। जिसके कारण भारत में अस्पृश्य समाज के बच्चों को शिक्षा से दूर रहना पड़ा। “वाल्मीकि रामायण और महाभारत काल में भी शूद्रों पर धार्मिक-शैक्षिक प्रतिबंध लागू रहे। रामायण काल में शंबूक ऋषि का तत्कालीन राजा द्वारा वध किया गया, क्योंकि उसने शुद्र होते हुए भी तपस्या की थी। महाभारत-काल में एकलव्य की कथा शूद्रों पर शिक्षा-प्राप्ति में प्रतिबंध का ज्वलंत उदाहरण है। गुरु द्रोणाचार्य द्वारा शिक्षा न देने पर भी ‘एकलव्य’ का दायां अंगूठा कटवा लेना शूद्रों के साथ छल-प्रपंच करके उनको आगे बढ़ने से रोकना ही था।”⁷ अछूत वर्ग के बच्चों को पढ़ने की चाह थी किंतु तत्कालीन समय में ब्राह्मण शिक्षक होने के कारण बच्चों को पढ़ने नहीं देते थे। शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है, ऐसी नसीहत देकर शूद्रों के बच्चों को शिक्षा के ज्ञान मंदिर से भगाया जाता था। जब कोई अछूत बच्चा हिम्मत करके पाठशाला में जाने की कोशिश करता, तो उसे डरा धमकाकर स्कूल से बाहर भेज दिया जाता। अगर कोई बच्चा जीद पर अड जाता है, तो उसे पाठशाला के बाहर बिठाकर दूर से ही पढ़ाया जाता। शिक्षक द्वारा इस बात पर



अधिक बल दिया जाता कि कैसे इस बच्चे को शिक्षा से दूर रखें। अगर वह बच्चा कुछ पढ़-लिखकर सीख गया, तो आगे चलकर मनमानी करेगा, सवर्णों के विरुद्ध खड़ा रहेगा, उच्च वर्ग की खिलाफत करेगा और सवर्णों की सेवा करने से इनकार कर देगा। शिक्षा के मुताबिक दलित समाज में परिवर्तन आ गया। शिक्षा का महत्व पहचान कर दलित समाज अपने आप में प्रगति करने लगा। समाज की प्रगति में शिक्षा की अहम भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. 'नालंदा विशाल शब्द सागर', आदिश बुक डिपो, पृष्ठ क्रमांक 1340.
2. 'महात्मा ज्योतिबा फुले', शेतकऱ्याचा असूड, स. अप्रैल 2017, सप्तर्षी प्रकाशन मंगलवेढा, पृष्ठ क्र.7

3. 'साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना', डॉ. दिलीप कुमार कसबे, ए.बी.एस पब्लिकेशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ क्रमांक 271
4. 'भीम भजनावली', भन्ते नागसेन महाथेरो, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक 40
5. 'जाग उठो, लोग कवि वामन दादा कर्डक के हिंदी गीतों का संकलन', संपादक प्राध्यापक डॉ. अशोक जोंधले, साहित्यायन प्रकाशन कानपुर, पृष्ठ क्रमांक 64
6. 'भीम भजनावली', भन्ते नागसेन महाथेरो, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 9
7. 'दलित शिक्षा का परिदृश्य', डॉ. कुसुम यदुलाल, कल्पज पब्लिकेशन दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक 22